कामिका एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Kamika Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — full chapter 54, controlling revision 336435. Also compared: Wikisource revision API — full exact controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 54 — whole electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 54 — full English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.54.1–29, Sanskrit Wikisource revision 336435, not a transcription of the original text.

कामिका का प्रश्न और पुण्य की तुलनाएँ

KATHA 6.54.1–13

युधिष्ठिर श्रावण की एकादशी का नाम पूछते हैं। चयनित संस्कृत का आरम्भ ‘सिते’ अर्थात् शुक्ल कहता है, जबकि अंग्रेज़ी तुलना कृष्ण कहती है। कृष्ण ब्रह्मा और नारद का पुराना संवाद सुनाते हैं। नारद कृष्ण पक्ष का नाम, देवता, विधि और पुण्य पूछते हैं। ब्रह्मा उसे श्रावण कृष्ण कामिका कहते हैं। आरम्भ का अंतर छिपाया नहीं गया और इससे नया शुक्ल-पक्ष कैलेंडर नहीं बनाया जाता।

सुनने का फल वाजपेय के समान कहा जाता है। शंख, चक्र और गदा वाले श्रीधर, विष्णु, माधव और मधुसूदन की पूजा तथा ध्यान की प्रशंसा है। गंगा, काशी, नैमिष और पुष्कर के धार्मिक पुण्य से तुलना आती है। सिंह राशि में गुरु के समय गोदावरी-स्नान और व्यतीपात के समय दण्डक का उल्लेख भी है। इन वचनों से वर्तमान वर्ष का स्नान-दिन या घड़ी का समय नहीं निकाला गया।

समुद्रों और वनों सहित पृथ्वी के दान से तुलना की जाती है। चयनित संस्कृत प्रसव करती गाय तथा गृह-उपयोगी वस्तुओं के दान का उल्लेख करती है; अंग्रेज़ी तुलना दूध देने वाली गाय कहती है। यह पशु दान करने की घरेलू प्रक्रिया या खरीद का आग्रह नहीं। श्रावण में श्रीधर-पूजा को देवों, गन्धर्वों और नागों की पूजा से जोड़ा जाता है। पाप से भयभीत व्यक्ति के लिए अपनी क्षमता के अनुसार कामिका पालन की बात आती है; भय पैदा करके व्रत, धन या दान माँगना इसका उपयोग नहीं होना चाहिए।

Yudhishthira asks the name of Shravana's Ekadashi. The selected Sanskrit opening says sita, bright, whereas the English comparison says dark. Krishna recounts an earlier Brahma–Narada dialogue. Narada asks the dark fortnight's name, deity, method and merit. Brahma calls it Shravana's dark Kamika. The opening difference is disclosed, not used to invent a new bright-fortnight calendar entry.

Hearing is compared with a Vajapeya sacrifice. Worship and meditation on Shridhara, Vishnu, Madhava and Madhusudana bearing conch, discus and mace are praised. Comparisons invoke Ganga, Kashi, Naimisha and Pushkara, Godavari bathing when Jupiter is in Leo, and Dandaka at vyatipata. These statements do not calculate a current-year bathing day or clock time.

The account compares merit with donating the earth, its oceans and forests. The selected Sanskrit mentions a cow during calving with household articles; the English comparison says milch cow. This is not a household animal-donation procedure or purchase request. Shravana worship of Shridhara is associated with worship of gods, gandharvas and nagas. Those afraid of sin are told to observe according to their capacity; this must not become fear-based demands for fasting, money or gifts.

उद्धार की प्रशंसा और तुलसी

KATHA 6.54.14–23

पाप की कीचड़ और संसार-सागर से निकलने के धार्मिक रूपक में कामिका की प्रशंसा होती है। उसके पुण्य को अध्यात्मविद्या में लगे लोगों के पुण्य से अधिक कहा जाता है। रात्रि-जागरण करने वालों के लिए यम की दुर्गति और बुरी योनि से बचने की प्रशंसा तथा व्रत करने वाले योगियों के लिए कैवल्य का कथन आता है। ये परलोक के धार्मिक कथन हैं, किसी व्यक्ति के जीवन या जन्म के सम्मान का माप नहीं।

तुलसी-पत्र से केशव की पूजा को पाप से अलग रहने की कमल-पत्र और जल वाली उपमा दी जाती है। एक भार सोना और उससे चार गुना चाँदी, रत्न, मोती, वैदूर्य और मूँगा देने से भी तुलसी की श्रेष्ठता कही जाती है। तुलसी के पत्ते और मंजरी से केशव की पूजा कही जाती है। इससे धन, पौधा या पूजा-सामग्री खरीदना अनिवार्य नहीं होता।

तुलसी को प्रणाम करते हुए देखने से पाप-शुद्धि, स्पर्श से शरीर-शुद्धि, नमस्कार से रोग-निवारण, जल देने से यम का भय, लगाने से कृष्ण की निकटता और चरणों में रखने से मुक्ति की धार्मिक प्रशंसा आती है। यह स्रोत की पूरी स्तुति का आशय है, चिकित्सा-सलाह नहीं। तुलसी को उपचार या खाने की अनिवार्य वस्तु न मानें; आवश्यक चिकित्सा जारी रखें। उपवास, जागरण या दान का पालन पाठक पर थोपा नहीं जाता।

Kamika is praised through religious metaphors of escaping sin's mud and worldly existence as an ocean. Its merit is praised above that of those devoted to spiritual knowledge. A night vigil is praised as avoiding Yama's unhappy destination and adverse rebirth; observing yogis are associated with kaivalya. These are religious afterlife statements, not measures of anyone's dignity or birth.

Worship of Keshava with Tulasi leaves is likened to water not adhering to a lotus leaf. Tulasi is praised above a bhara measure of gold, silver at four times that weight, gems, pearls, vaidurya and coral. Worship of Keshava with leaves and flowering tips is mentioned. No money, plant or ritual purchase is thereby required.

The Tulasi salutation praises seeing it as purifying sin, touching as purifying the body, bowing as removing disease, watering as frightening Yama, planting as bringing closeness to Krishna and placing it at the Lord's feet as liberation. This covers the source's whole praise, not medical advice. Tulasi is not prescribed as treatment or compulsory food; necessary medical care continues. Fasting, vigils and donations are not imposed on readers.

दीप की प्रशंसा और पूरा समापन

KATHA 6.54.24–29

भगवान के सामने दिन और रात दीप देने का पुण्य चित्रगुप्त भी नहीं गिन सकते, ऐसा कहा जाता है। कृष्ण के लिए दीप देने पर पितरों की स्वर्ग में अमृत से तृप्ति की प्रशंसा आती है। घी या तिल के तेल का दीप देने वाले के लिए सूर्यलोक में सौ करोड़ दीपों के साथ सम्मान कहा जाता है।

ब्रह्मा अन्त में कामिका की महिमा बताते हुए ब्राह्मण-वध और भ्रूण-वध तक के पाप-क्षय की धार्मिक प्रशंसा कहते हैं। श्रद्धा से सुनने और विष्णुलोक की प्राप्ति का कथन आता है। ऐसे कथन हानि की जवाबदेही मिटाने, हिंसा को उचित ठहराने या किसी परिवार के स्वास्थ्य-संबंधी निर्णय पर दोष लगाने का आधार नहीं।

अलग समापन-वाक्य अध्याय 54 को उमा–महेश्वर संवाद में श्रावण कृष्ण कामिका के नाम से बंद करता है। तत्काल कृष्ण–युधिष्ठिर प्रश्नोत्तर में ब्रह्मा–नारद संवाद सुनाया गया है। सभी 29 क्रमांकित स्थान और समापन इस मूल पुनर्कथन में पूरे हैं; यह नई पात्र-कहानी या संस्कृत का अक्षरशः पाठ नहीं।

दीप देना वैकल्पिक है। जलाएँ तो निगरानी रखें और जाने या सोने से पहले सुरक्षित रूप से बुझाएँ; दिन-रात की प्रशंसा बिना निगरानी आग जलाने का आदेश नहीं। पितरों का लोक, अमृत, दीपों की संख्या और विष्णुलोक धार्मिक कल्पना हैं, किसी परिजन की दशा का ज्ञान या निश्चित परलोक-गारंटी नहीं।

Merit from offering a lamp before the Lord by day and night is said to exceed Chitragupta's counting. A lamp for Krishna is praised as satisfying ancestors with nectar in heaven. A ghee or sesame-oil lamp is associated with honour in the sun's world amid a hundred crore lamps.

Brahma closes Kamika's praise with religious release even from sins described as killing a Brahmin or an embryo. Faithful hearing and reaching Vishnu's world are praised. These statements do not remove accountability for harm, justify violence or assign blame to a family's health-related decisions.

A separate colophon closes chapter 54 as Shravana's dark Kamika within Uma–Maheshvara's dialogue. The immediate Krishna–Yudhishthira exchange recounts Brahma–Narada. All 29 numbered positions and the closing statement are covered in this original retelling; it is not an invented character story or verbatim Sanskrit transcription.

A lamp is optional. Attend it and extinguish it safely before leaving or sleeping; day-and-night praise is not an instruction for unattended fire. Ancestral destinations, nectar, the lamp count and Vishnu's world are religious imagery, not knowledge of a relative's condition or a guaranteed afterlife.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Kamika Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.54.1–29, revision 336435, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.